पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सिख–सम्मेलन में महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–24.09.2016, समय–11:30 बजे पूर्वाह्न, स्थान–होटल मौर्या)

बिहार सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय सिख–सम्मेलन' में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य की पर्यटन मंत्री श्रीमती अनिता देवी जी, मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह जी, बिहार के पूर्व मुख्य सचिव–सह– उच्चस्तरीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष श्री जी॰एस॰ कंग जी, विभागीय जाँच आयुक्त डॉ॰ अमिता पॉल जी, पर्यटन विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती हरजोत कौर जी, सम्मेलन में पधारे अतिथिगण, बुद्धिजीवीगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

त्रिदिवसीय 'अन्तर्राष्ट्रीय सिख–सम्मेलन' के समापन–समारोह में उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। बिहार के सपूत एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि– ''यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शताब्दियों तक भारत का इतिहास मुख्यतः बिहार के इतिहास के रूप में जाना जाता रहा है। पूरे देश में बिहार ही एक ऐसा राज्य है, जहाँ तीन–तीन धर्मों–सिख, बौद्ध एवं जैन का प्रादुर्भाव हुआ। सिख धर्म के 10वें एवं अंतिम गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज की जन्मस्थली होने के कारण बिहार एक विशिष्ट स्थान रखता है।'' आप सभी अवगत हैं कि हम जनवरी, 2017 में गुरू गोविन्द सिंह जी का '350वाँ प्रकाशपर्व' मनाने जा रहे हैं। यह बिहार की धरती के लिए सौभाग्य की बात है।

श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज के उपदेश, उनका साहस, उनका सैन्य–संचालन एवं समाज सेवा की भावना आज भी हमें प्रेरित करती है। गुरू जी ने अपने भक्तों के हृदय में साधुता एवं शौर्य–दोनों का अद्‌भुत संचार किया, ताकि उनके अनुयायी न्याय, शांति एवं अधिकारों के लिए लड़ सकें और समाज के दबे–कुचले एवं अपेक्षित वर्ग के लोगों के उत्थान हेतु भी काम कर सकें। गुरू जी त्याग एवं बलिदान के प्रतीक रहे हैं। आजादी, अधिकारों की समानता तथा भाईचारा स्थापित करने के लिए उनके त्याग एवं बलिदान इतिहास–प्रसिद्ध रहे हैं। गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के संदेश ही आज भी सिख–समुदाय के मूल मंत्र बने हुए हुए हैं। आज 'खालसा पंथ' ने पूरे विश्व में जाति, समाज, रंगभेद से ऊपर उठकर अत्याचार एवं आतंक के खिलाफ आवाज बुलंद किया है तथा असहायों को पर्याप्त सहायता पहुँचाई है।

श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज एक अनूठे कवि भी थे। उनके द्वारा रचित कई कविताएँ आज भी समाज को प्रेरित करती हैं। गुरू गोबिन्द सिंह जी के पदों में भक्ति और मुक्ति के ऐसे सुमार्ग बताये गये हैं, जिनका अनुसरण कर मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है। उन्होंने कहा है कि–

''अलप अहार सुलाप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति।

सील,संतोख सदा निरबाहिबो, ह्‌वैबो त्रिगुण अतीति।।

काम,क्रोध, हंकार, लोभ, हठ, मोह न मन सो ल्‌यावै।

तब ही आतम तत को दरसे, परम पुरख कह पावै।।''

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, हठ, मोह, अहंकार आदि से विरत रहते हुए, प्रेम और भाईचारा के मार्ग पर चलकर परमात्म तत्व प्राप्त करने की गुरू गोविन्द सिंह की शिक्षा, भौतिकवाद से त्रस्त आधुनिक मानव–जाति के लिए अनुपम वरदान है।

इस सम्मेलन के दौरान, विगत 3 दिनों में देश–विदेश से आये सिख धर्म एवं समुदाय के विद्वानों एवं चिन्तकों ने संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहन विवेचना की है, जिससे सिख–समुदाय की उपलब्धियों और प्रगति पर व्यापक रूप से प्रकाश पड़ा है। साथ ही, इस समुदाय के समक्ष मौजूदा चुनौतियों पर भी गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सिख–समुदाय के लोगों की अग्रणी भूमिका रही है। कृषि के क्षेत्र मे 'हरित क्रांति' पंजाब में ही हुई, जहाँ सिख समुदाय के लोगों की बहुलता है। इस क्षेत्र में डॉ॰ एम॰एस॰ रंधावा के योगदान को भुला पाना मुश्किल है। पूरे देश की आबादी का मात्र 2 प्रतिशत हिस्सा होने के बावजूद, इस समुदाय के 20 प्रतिशत लोग सैन्य–सेवा में हैं, जिन्होंने वीरता की मिशाल स्थापित करते हुए 5 परमवीर चक्र, 40 महावीर चक्र एवं 209 वीर चक्र प्राप्त किये हैं। इस समुदाय ने देश को सरदार ज्ञानी जैल सिंह के रूप में एक आम जनता से जुड़ा हुआ राष्ट्रपति एवं डॉ॰ मनमोहन सिंह जी के रूप में एक सुयोग्य प्रधानमंत्री भी दिया है। इसके अतिरिक्त खेलों के क्षेत्र में श्री मिल्खा सिंह एवं श्री अभिनव बिन्द्रा भारतीय क्रीड़ा–जगत के उज्जवल नक्षत्र हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र, फिल्मी– जगत या संगीत की दुनियाँ– हर जगह यह समुदाय हमेशा से अग्रणी रहा है।

विगत 3 दिनों से देश–विदेश के प्रख्यात विद्वानों का यहाँ समागम एवं उनके विद्वतापूर्ण व्याख्यान व परिचर्चाओं के आयोजन–

गुरू गोविन्द सिंह जी एवं सिख समुदाय के प्रति सच्चे सम्मान के परिचायक हैं।

इस सम्मेलन में आये देश–विदेश के प्रख्यात विद्वानों के प्रति मैं अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। वे यहाँ आये एवं इस सम्मेलन को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, यह अत्यन्त प्रशंसनीय है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सर्वस्वदानी दशमेश गुरू श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें प्रकाश पर्व' पर हमारे सभी अतिथिगण अपने परिवार के साथ पुनः पटना पधारेंगे एवं अन्य श्रद्धालुओं को भी यहाँ आने के लिए प्रेरित करेंगे। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।